INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC EXAM

2023

LATEST EDITION

HANDWRITTEN NOTES

SSC-CHSL

(10 + 2) TIER 1 & 2

STAFF SELECTION COMMISSION
COMBINED HIGHER SECONDARY LEVEL

HANDWRITTEN NOTES

भाग - 2

सामान्य जागरूकता (G.K.)

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC - CHSL

TIER – 1 & 2

STAFF SELECTION COMMISSION COMBINED HIGHER SECONDARY LEVEL

10 + 2

भाग – 2

सामान्य जागरूकता (G.K.)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**SSC CHSL (COMBINED HIGHER SECONDARY LEVEL)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **कर्मचारी चयन आयोग (SSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**SSC CHSL (COMBINED HIGHER SECONDARY LEVEL)**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/vqyxwn

Online order करें - https://cutt.ly/g0O6SHh

मूल्य :

संस्करण : नवीनतम (2023)

भारत का भूगोल

1. भूगोल का सामान्य परिचय 1
2. भौतिक विभाजन 4
3. नदियाँ एवं झीलें 10
4. जलवायु 16
5. कृषि (agriculture) 18
6. मृदा / मिट्टी 26
7. प्राकृतिक वनस्पतियाँ 28
8. प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन 31
9. उद्योग (Industry) 36
10. परिवहन तंत्र 41

विश्व भूगोल

48- 91

- ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल
- महाद्वीप एवं महत्वपूर्ण स्थान
- एशिया की प्रमुख नदियां
- एशिया की प्रमुख जल संधियां
- अफ्रीका महाद्वीप के प्रमुख पर्वत एवं पठार
- पर्वत (Mountains) एवं पठार
- विश्व के प्रमुख महासागर और सागर
- देशो की संसदों के नाम

इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

1. सिन्धु घाटी सभ्यता 92
2. वैदिक काल 95
3. बौद्ध धर्म, जैन धर्म, शैव धर्म, 100
4. महाजनपद काल 105
5. मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल 107

6. गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल 111
7. कुषाण वंश एवं सातवाहन राजवंश 114

मध्यकालीन भारत

1. अरबों का सिन्ध पर आक्रमण 116
2. दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश 118
3. भक्ति एवं सूफी आंदोलन 128
4. बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य 132
5. मुगल साम्राज्य (1526 - 1707 ई.) 135

आधुनिक भारत का इतिहास

1. यूरोपीय कम्पनियों का आगमन 144
2. मराठा साम्राज्य 150
3. अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ 152
4. 1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन 159
5. भारत में राष्ट्रीय जागरण या आंदोलन 164
6. गाँधी युग और असहयोग आंदोलन 168
7. क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक 174

भारतीय संस्कृति

1. भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक 178
2. भारतीय चित्रकला 180
3. भारतीय नृत्य कलाएँ 182
4. मुगलकालीन प्रमुख इमारतें 184

संविधान

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 188
2. संविधान सभा 191
3. संविधान की विशेषताएं 193
4. संघ एवं इसका राज्य क्षेत्र 196
5. भारतीय नागरिकता 197
6. मौलिक अधिकार 199
7. नीति निदेशक तत्व 202
8. राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति 204
9. भारतीय संसद (विधायिका) 208
10. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद 214
11. उच्चतम न्यायालय 215
12. राज्य कार्यपालिका 217
13. मुख्यमंत्री, राज्य महाधिवक्ता, राज्य विधानमण्डल 219
14. उच्च न्यायालय 225
15. पंचायती राज 229
16. निर्वाचन आयोग 233
17. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक 234
18. नीति आयोग 235
19. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग 237
20. संविधान संशोधन 238

अर्थशास्त्र

भारतीय अर्थव्यवस्था

1. अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएँ 239
2. राष्ट्रीय आय और उत्पाद 240
3. मुद्रा एवं बैंकिंग 242

4. बजट एवं बजट निर्माण 245
5. कर TAX (GST) 247
6. केंद्र सरकार की योजनाएँ 248
7. गरीबी एवं बेरोजगारी 255

विविध 257-337

- महत्वपूर्ण दिवस - 2022
- विश्व के प्रमुख देश, राजधानी एवं उनकी मुद्राओं की सूची
- पुस्तक एवं लेखक - 2022
- भारत में सर्वाधिक बड़ा, लम्बा एवं ऊँचा
- विश्व में सबसे बड़ा छोटा, लम्बा तथा ऊँचा
- भारत में प्रथम पुरुष
- भारत में प्रथम महिला
- भारत का निम्न क्षेत्रों में प्रथम एवं द्वितीय स्थान
- भारत में विभिन पुरस्कार एवं सम्मानित व्यक्ति
- विश्व के प्रमुख संगठन और उनके मुख्यालय
- आविष्कार-आविष्कारक
- भारत के प्रमुख खेल
- राष्ट्रीय खेल पुरस्कार
- भारत में विश्व धरोहर स्थल
- भारत के राज्यों के मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल -2022
- भारत के राजकीय पशु पक्षी , वृक्ष और फूल की सूची
- भारत के राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य
- केन्द्रीय मंत्रियों की सूची – 2022
- राज्यों की राजधानी और स्थापना दिवस
- केंद्र शासित प्रदेश 2022 केंद्र शासित प्रदेशों और उनकी राजधानियों की सूची : Union
- महारत्न कम्पनियों के निर्देशक
- राष्ट्रीय महिला नियुक्तियाँ

- शहरों / अभियानों के परिवर्तित नाम
- 2022 में भौगोलिक संकेत (GI Tags) प्राप्त उत्पाद

भारत का भूगोल
अध्याय – I

सामान्य परिचय

- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6'उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में भारत का सातवाँ स्थान है। यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में s दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार में है)।

  भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) हैकर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के बीचों - बीच से गुजरती है।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु	
दक्षिणतम बिन्दु- इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख) पश्चिमी बिन्दु- सर क्रीक (गुजरात) पूर्वी बिन्दु-किबिथु (अरुणाचल प्रदेश) मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी (तमिलनाडु)	
स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य	
पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर
अफगानिस्तान (1)	जम्मू और कश्मीर
चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांखंड, सिक्किम,अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तरांखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश,नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

प्रमुख चैनल / जलडमरूमध्य	
विभाजित स्थल खण्ड	**चैनल/खाड़ी/स्ट्रेट**
इन्दिरा प्वाइंट-इण्डोनेशिया	ग्रेट चैनल
लघु अंडमान-निकोबार	10°चैनल
मिनीकॉय-लक्षद्वीप	9° चैनल
मालदीव-मिनीकाय	8° चैनल
भारत-श्रीलंका	मन्नार की खाड़ी
पाक की खाड़ी	पाक स्ट्रेट

- भारत के जिन राज्यों में से होकर कर्क रेखा गुजरती है वे हैं- गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल, त्रिपुरा और मिजोरम ।
- भारत को पाँच प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है ।

1. उत्तर का पर्वतीय प्रदेश
2. उत्तर का विशाल मैदान
3. दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार
4. समुद्री तटीय मैदान
5. थार का मरुस्थल

- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है।
- भारतीय मानक समय की देशांतर रेखा (82°30) उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं आंध्रप्रदेश से गुजरती है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

शीर्ष पाँच क्षेत्रफल वाले राज्य	
राज्य	**क्षेत्रफल वर्ग किमी.**
राजस्थान	342239
मध्यप्रदेश	308245
महाराष्ट्र	307713
उत्तर प्रदेश	240928
गुजरात	196024

शीर्ष पाँच भौगोलिक क्षेत्र वाले जिले भारत में	
जिला	**क्षेत्रफल वर्ग किमी.**
कच्छ	45652
लेह	45110
जैसलमेर	38428
बाड़मेर	28387
बीकानेर	27284

- क्षेत्रफल की दृष्टि से अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह सबसे बड़ा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से दिल्ली सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- मध्य प्रदेश भारत का सबसे बड़ा पठारी राज्य है।
- मध्य प्रदेश में वन (जंगल) सबसे अधिक है।
- भारत में द्वीपों की कुल संख्या 248 है बंगाल की खाड़ी में 223 तथा अरब सागर में 25 द्वीप हैं ।
- पूर्वी घाट को कोरोमंडल तट के नाम से जाना जाता है।
- पश्चिमी घाट को मालाबार तट के नाम से जाना जाता है।
- उत्तर प्रदेश की सीमा सबसे अधिक राज्यों (8) को छूती है- उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं बिहार।]
- भारत में सर्वाधिक नगरों वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जबकि मेघालय में सबसे कम नगर हैं।

अध्याय – 3

नदियाँ एवं झीलें

- **नदियाँ**

भारतीय अपवाह तंत्र

अरब सागरीय अपवाह तंत्र बंगाल की खाड़ी का

- **अपवाह तंत्र** किसी नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को कहते हैं।
- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं। बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,
- जबकि 23% भाग जिसमें सिन्धु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं। अपना जल अरब सागर में गिराती हैं।

हिमालयी अपवाह तंत्र

- उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं।
- इन्ही नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।
- इंड़ो ब्रह्म नदी:- भू-वैज्ञानिक मानते है, कि मायोसीन कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी। जिसे शिवालिक या इंड़ो - ब्रह्म नदी कहा गया हैं।
- इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र -
- 1.पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
- 2.मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
- 3.पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

भारतीय नदी प्रणाली

1. सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु जल संधि 1960 में हुई थी।
- तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलज का नियंत्रण भारत के पास है।
- तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया है।

1.व्यास, रावी, सतलुज → 80% पानी भारत, 20% पानी पाकिस्तान

2.सिन्धु, झेलम, चिनाब → 80% पानी पाकिस्तान, 20% पानी भारत

सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km हैं।
- भारत में सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी हैं।
- सिन्धु नदी की कुल लम्बाई 2,880 किमी. है।
- भारत में सिन्धु नदी की लम्बाई केवल 1,114 km हैं।
- भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी है।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक चेमयांगुंग ग्लेशियर (हिमनद) से होता है, जो 4,164 मीटर उँचाई पर स्थित हैं। तिब्बत में इसे शेर मुख कहते हैं।
- **सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।**
- अन्य सहायक नदियाँ – जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, नुबरा, गास्टिंग व द्रास, गोमल।
- सिन्धु नदी, कराची (पाकिस्तान) के निकट अरब सागर में जाकर गिरती है।
- यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती हैं। जहाँ दाहिने तट पर काबुल नदी इसमें मिलती है।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती हैं।
- पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया है।
- सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों का उद्गम स्थल तिब्बत का पठार हैं।

- तिब्बत के पठार से निकलने वाली अन्य नदियाँ - यांग्त्सी - क्यांग, जियांग, ह्वांगहो (पीली नदी, पीत), इरावदी, मेकांग एवं सतलज ।
- जास्कर नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर की सीमा पर सरचू के उच्च अक्षांशीय पठारी भाग से होता है ।
- यह नदी जास्कर श्रेणी में गहरे गॉर्ज का निर्माण करती है । तथा कठोर चट्टानी भागो से होकर बहती है ।
- यह पहले उत्तर फिर पूर्व की ओर बहते हुए नेमू के निकट सिन्धु नदी से मिल जाती है ।

सतलज नदी -

- यह एक पूर्ववर्ती नदी है ।
- यह तिब्बत में ५,५५५ मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर झील के निकट राक्षस ताल झील से निकलती है ।
- वहाँ इसे लॉंगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता है ।
- सतलज नदी का संगम स्थल कपूरथला के द.- प. सिरे पर व्यास नदी में तथा मिठानकोट के निकट सिन्धु नदी में है ।
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंड़ो - तिब्बत सीमा के समीप शिपकी ला दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहती है ।
- सतलज नदी की सहायक नदियाँ है -सिप्ती, वास्पा, व्यास
- यह हिमालय की श्रेणियों (महान हिमालय और जास्कर श्रेणी) को काटकर महाखड्ड का निर्माण करती है ।
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है । यह भाखड़ा नांगल परियोजना के नहर तंत्र का पोषण करती है तथा आगे जाकर व्यास नदी में मिल जाती है ।

व्यास नदी (विपाशा नदी) :-

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है ।
- यह रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड़ से निकलती है ।
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती है ।
- यह धौलाधर श्रेणी में काती और लारगी में महाखण्ड़ का निर्माण करती है ।
- यह हरिके बेराज के पास सतलज नदी में जाकर मिल जाती है ।
- पार्वती, सैन्ज, तीर्थन, ऊहल इसकी सहायक नदियाँ है ।

रावी नदी (परूष्णी नदी या इरावती नदी)

- यह नदी सिन्धु की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है।
- जो हिमालय की कुल्लु की पहाड़ियों में स्थित रोहतांग दर्रे के पश्चिम से निकलती हैं तथा चंबा घाटी से होकर बहती है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले व सराय सिन्धु के निकट चिनाब नदी में मिलने से पहले यह नदी पीरपंजाल के दक्षिण-पूर्वी भाग व धौलाधर के बीच से प्रवाहित होती है ।
- अंत में ये झांग जिले की सीमा पर चिनाब नदी में मिल जाती है ।

चिनाब नदी (अस्किनी)

- यह सिन्धु की सबसे बड़ी सहायक नदी है ।
- यह लाहुल में बरालाचाला दर्रे के विपरीत दिशा में चंद्रा और भाग नामक दो सरिताओं के मिलने से बनती है ।
- ये सरिताएँ हिमाचल प्रदेश में केलांग के निकट तांड़ी में आपस में मिलती हैं ।
- इसलिए इसे चंद्रभागा के नाम से भी जाना जाता है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले भारत में इस नदी का बहाव क्षेत्र ।।80 किमी है ।
- यह त्रिमू के निकट झेलम नदी में जाकर मिलती है ।

झेलम नदी (वितस्ता)

- यह सिन्धु की सहायक नदी है ।
- जो कश्मीर घाटी के दक्षिण-पूर्वी भाग में पीरपंजाल गिरिपद में स्थित वेरीनाग के निकट शेषनाग झरने से निकलती है ।
- पाकिस्तान में प्रवेश करने से पहले यह नदी श्रीनगर और वुलर झील से बहते हुए एक तंग व गहरे महाखण्ड से गुजरती है ।
- पाकिस्तान में झंग के निकट यह चिनाब नदी से मिलती है ।

अध्याय - 6

मृदा / मिट्टी

- मिट्टी के अध्ययन को मृदा विज्ञान या पेडोलॉजी(pedology) कहा जाता है।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) द्वारा 1956 में संरचनात्मक मृदा और खनिज, मृदा के रंग व संसधानात्मक महत्त्व को ध्यान में रखते हुए भारत के मृदा को 8 भागों में विभाजित किया है।
- देश में मृदा अपरदन व उसके दुष्परिणामो पर नियंत्रण हेतु 1953 **में केन्द्रीय** मृदा सरक्षण बोर्ड का गठन किया गया।
- मरुस्थल की समस्या के अध्ययन के लिए जोधपुर में central arid zone reserch institute(CAZRI) की स्थापना की गई है।
- मृदा अपरदन को वनरोपण द्वारा रोका जा सकता है।
- पश्चिमी राजस्थान की मिट्टी में कैल्शियम की अधिकता पायी जाती है।
- भारत की मुद्राओं में सूक्ष्म तत्व जस्ता की सर्वाधिक कमी है।
- जैव मृदा(organic soil) का रंग अम्लीय व फेरस आयरन के कारण नीला होता है।

मृदा के प्रकार

1. जलोढ़ मृदा (तराई मृदा , बांगर मृदा, खादर मृदा)
2. काली मृदा
3. लाल और पीली मृदा
4. लैटेराइट मृदा
5. पर्वतीय मृदा
6. मरुस्थलीय मृदा
7. लवणीय मृदा
8. पीट एवं जैव मृदा

- 1953 में केन्द्रीय मृदा संरक्षण बोर्ड का गठन किया गया।
- मृदा में सबसे अधिक मात्रा में क्वार्टज खनिज पाया जाता हैं।
- ऐपेटाइट नामक खनिज से मृदा को सबसे अधिक मात्रा में फास्फोरस प्राप्त होता हैं।
- वनस्पति मिट्टी में ह्युमस की मात्रा निर्धारित करती हैं।
- मृदा में सामान्यतः जल 25 प्रतिशत होता हैं।

1.जलोढ़ मिट्टी -

- यह मिट्टी भारत के लगभग 22% क्षेत्रफल पर पायी जाती है भारत का सम्पूर्ण उत्तरी मैदान, तटीय मैदान जलोढ़ मिट्टी का बना है।
- इसमें गाद, मर्तिका व रेत (slit ,clay & sand) के कण पाये जाते हैं।
- जलोढ़ मिट्टी को कछारी मृदा भी कहा जाता है।
- इस मृदा का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए तलछट के निक्षेपण से हुआ है / इस प्रकार यह एक अक्षेत्रीय मृदा है।
- इस मृदा के तीन प्रकार होते है -1. बांगर (bangar) 2. खादर (khadar), 3. तराई
- पुराने जलोढ़ मिट्टी के मैदान **बांगर** कहलाते हैं। **बांगर** मृदा सतलज एवं गंगा के मैदान के उपरी भाग तथा नदियों के मध्यवर्ती भाग में पाई जाती है। यहाँ बाढ़ का पानी नही पहुँच पाता है। इस मृदा में चीका एवं बालू की मात्रा लगभग बराबर होती है।
- नयी जलोढ़ मिट्टी को **खादर** कहा जाता है। यह नवीन जलोढ़ मृदा है यहाँ प्रत्येक वर्ष बाढ़ का पानी पहुँचने से नवीनीकरण होता रहता है। यह मृदा खरीफ के फसल के लिए उपयुक्त होती है।
- यह नदियों द्वारा निर्मित मैदानी भाग में पंजाब से असम तक तथा नर्मदा, ताप्ती, महानदी, गोदावरी, कृष्णा व कावरी के तटवर्ती भागों में विस्तृत है।
- यह मिट्टी उच्च भागों में अपरिपक्व तथा निम्न क्षेत्रों में परिपक्व हैं।
- इस मिट्टी में पोटाश व चूना प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जबकि फास्फोरस, नाइट्रोजन व जीवांश का अभाव पाया जाता है।
- यह उपजाऊ मृदा है उर्वरता के दृष्टिकोण से यह काफी अच्छी मानी जाती है। इसमें धान, गेहूं, मक्का, तिलहन, दलहन, आलू आदि फसलें उगायी जाती है।
- **तराई मृदा** में महीन कंकड़, रेत, चिकनी मृदा, छोटे - छोटे पत्थर आदि पाएँ जाते है।
- इस मृदा में चट्टानी कणों के होने से जल ग्रहण की क्षमता अधिक होती है।
- इस मृदा में चूने की मात्रा अधिक होती हैं।
- यह गन्ने की कृषि के लिए उपयुक्त होता है।

2.लाल - पीली मिट्टी :-

- यह देश के लगभग 6.1 लाख वर्ग कि.मी. (18.6%) भू-भाग में हैं।

- इस मिट्टी का विकास आर्कियन ग्रेनाइट, नीस तथा कुड़प्पा एवं विंध्यन बेसिनों तथा धारवाड़ शैलों की अवसादी शैलो के उपर हुआ है ।
- इनका लाल रंग लौह ऑक्साइड़ की उपस्थिति के कारण हुआ है ।
- यह मिट्टी आंशिक रूप से अम्लीय प्रकार की होती हैं । इसमें लौहा, एल्युमीनियम तथा चूने का अंश कम होता हैं तथा जीवांश (ह्यूमस), नाइट्रोजन तथा फास्फोरस की कमी पाई जाती हैं ।
- यह मिट्टी प्राय : उर्वरता-विहीन बंजर भूमि के रूप में पायी जाती है ।
- भारत में यह मृदा झारखण्ड के संथाल परगना अवाम छोटा नागपुर का पठार पश्चिम बंगाल के पठारी क्षेत्र तमिलनाडु कर्नाटक दक्षिण – पूर्व महाराष्ट्र पश्चिमी एवं दक्षिणी आंध्रप्रदेश मध्यप्रदेश, मेघालय की गारो, खासी एवं जयन्तिया की पहाड़ी क्षेत्रों नागालैंड, राजस्थान में अरावली के पूर्वी क्षेत्र एवं छत्तीसगढ़ के अधिकांश भाग उड़ीसा एवं उत्तर प्रदेश के झाँसी ललितपुर मिर्जापुर में पाई जाती हैं /
- इस प्रकार के मृदा में मुख्यत : कपास, गेहूँ, दाले, चावल एवं मोटे अनाज की कृषि की जाती है ।
- तमिलनाडु व कर्नाटक में इस मृदा में रबड़ एवं कहवा का विकास किया जा रहा है।

3.काली मिट्टी –

- इसका निर्माण बेसाल्ट चट्टानों के टूटने-फूटने से होता है ।
- इसमें जलधारण क्षमता सबसे अधिक होती हैं ।
- स्थानीय भाषा में इसे रेगुर कहा जाता है ।
- काली मिट्टी को स्वत: जुताई वाली मृदा भी कहा जाता है । जिसमें सिचाई की कम आवश्यकता पड़ती है ।
- यह मिट्टी कपास की खेती के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है ।
- यह मिट्टी उष्ण उष्णकटिबंधीय चरनोजम तथा काली कपासी मिट्टी के नाम से भी जानी जाती हैं ।
- इस मिट्टी का काला रंग टिटेनीफेरस मैग्नेटाइट एवं जीवांश (ह्यूमस) की उपस्थिति के कारण होता है ।
- मालवा के पठारों (malwa plateau) में काली मृदा की अधिकता है ।
- यह सर्वाधिक मात्रा में महाराष्ट्र में पाई जाती है ।
- इसका निर्माण दक्कन ट्रेप के लावे से हुआ है ।
- इनमें लौहे, चूने, कैल्शियम, पोटाश, एल्युमिनियम तथा मैग्नीशियम कार्बोनेट से समृद्ध होती हैं । इनमें जीवांश, नाइट्रोजन व फास्फोरस की कमी पाई जाती हैं ।
- भारत में यह मृदा मुख्यत : महाराष्ट्र, पश्चिमी मध्य प्रदेश उत्तरी कर्नाटक, उत्तरी आंध्रप्रदेश, उत्तर - पश्चिमी तमिलनाडु, दक्षिण- पूर्वी राजस्थान आदि क्षेत्र में पाएँ जाते हैं।
- यह जड़दार फसलों जैसे - कपास, सोयाबीन, चना, तिलहन, खट्टे फलों तथा मोटे अनाजों के लिए उपयुक्त होती हैं ।

4.लैटेराइट मिट्टी(Laterite soil) –

- यह देश के लगभग 1.26 लाख क्षेत्र में विस्तृत हैं ।
- यह भारत में मुख्यतः मालाबार तटीय प्रदेश में पायी जाती है ।
- येह केरल, महाराष्ट्र व असम में सबसे अधिक मात्रा में पाई जाती हैं ।
- इनमें लौहा, सिलिका व एल्युमिनियम प्रचुर मात्रा में पाया जाता हैं तथा नाइट्रोजन, पोटाश, चूना व जैविक पदार्थों की इससे प्रायः कमी पाई जाती हैं ।
- लोहे की मात्रा अधिक होने के कारण लैटेराइट मिट्टी दिनों-दिन अनुर्वर (infertile) होती जा रही हैं ।
- अम्लीय होने के कारण इस मृदा में चाय, इलायची, मोटे अनाज, काजू एवं दलहन की कृषि की जाती हैं
- गहरी लाल लैटराइट में लौह-ऑक्साइड तथा पोटाश की बहुलता होती हैं । इसकी उर्वरता कम होती हैं ।
- सफेद लैटराइट की उर्वरता सबसे कम होती हैं । और केओलिन के कारण इसका रंग सफेद होता हैं ।

5.मरुस्थलीय मिट्टी –

- यह राजस्थान, सौराष्ट्र हरियाणा तथा दक्षिणी पंजाब में पाई जाती हैं ।
- इसमें घुलनशील लवणों तथा फास्फोरस की प्रचुरता पाई जाती हैं ।
- सिंचाई द्वारा इसमें ज्वार, बाजरा, मोटे अनाज व सरसों आदि उगायें जाते हैं ।
- यह मृदा पश्चिमी राजस्थान, दक्षिणी पंजाब, दक्षिणी हरियाणा, एवं उत्तरी गुजरात में पाई जाती है।
- मरुस्थलीय मिट्टी में नाइट्रोजन का अभाव पाया जाता हैं ।

6.पर्वतीय मिट्टी –

- इसे वनीय मृदा भी कहा जाता हैं ।
- ये नवीन अविकसित मृदा का रूप हैं जो कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक फैली हुई हैं ।

अध्याय – 2

दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश

गुलाम वंश से लेकर लोदी वंश

दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत के क्रमानुसार पाँच वंश निम्नलिखित थे -

गुलाम वंश के शासक -

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई. तक)

- भारत में तुर्की राज्य /दिल्ली सल्तनत /मुस्लिम राज्य की स्थापना करने वाला शासक ऐबक ही था।
- गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में की थी। इसने अपनी राजधानी लाहौर में बनाई।
- ऐबक का अर्थ होता है चंद्रमुखी।
- ऐबक के राजवंश को कुतुबी राजवंश के नाम से जन जाता है।
- मुहम्मद गौरी ने ऐबक को अमीर-ए-आखूर अस्तबलों का प्रधान के पद पर नियुक्त किया।
- 1192 ई. के तराईन के युद्ध में ऐबक ने गौरी की सहायता की।
- तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद गौरी ने ऐबक को अपने मुख्य भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त किया।
- जून 1206 में राज्याभिषेक करवाया तथा सुल्तान की बजाय मलिक/सिपहसालार की उपाधि धारण की यह उपाधि इसे मुहम्मद गौरी ने दी थी।
- इसने अपने नाम के सिक्के भी नहीं चलाये एवं अपने नाम का खुतबा पढ़वाया (खुतबा एक रचना होती थी जो मौलवियों से सुल्तान शुक्रवार की रात को नजदीक की मस्जिद में अपनी प्रंशसा में पढ़वाते थे।)खुतबा शासक की संप्रभूता का सूचक होता था।
- ऐबक ने प्रारंभ इंद्रप्रस्थ में दिल्ली के पास को सैनिक मुख्यालय बनाया तथा कुछ समय बाद यल्दौज तथा कुबाजा (मुहम्मद गौरी के दास) के संघर्ष को देखते हुए लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- ऐबक ने यल्दौज पर आक्रमण कर गजनी पर अधिकार कर लिया, लेकिन गजनी की जनता यल्दौज के प्रति वफादार थी तथा 40 दिनों के बाद ऐबक ने गजनी छोड़ दिया।

ऐबक की मृत्यु -

- 1210 ई. में लाहौर में चौगान पोलो खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मौत हो गई। इसका मकबरा लाहौर में ही बनाया गया है।
- भारत में तुर्की राज्य का वास्तविक संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को मान जाता है।
- भारत में मुस्लिम राज्य का संस्थापक मुहम्मद गौरी को माना जाता है। स्वतंत्र मुस्लिम राज्य का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को माना जाता है।
- कुत्तुबुद्दीन ऐबक के दरबार में हसन् निजामी एवं फख-ए-मुदब्बिर आदि प्रसिद्ध विद्वान थे।
- 'कुव्वत-उल-इस्लाम -''अढ़ाई दिन का झोंपड़ा बनवाया। तथा 'कुतुबमीनार 'का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरू करवाया और इल्तुतमिश ने पूरा किया। कुतुबमीनार शेख ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में बनवाया गया है।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को अपनी उदारता एवं दानी प्रवृति के कारण लाखबख्श (लाखों का दानी)कहा गया है।
- इतिहासकार मिन्हाज ने कुतुबुद्दीन ऐबक को उसकी दानशीलता के कारण हातिम द्वितीय की संज्ञा दी है।
- प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करने वाला ऐबक का सहायक सेनानायक बख्तियार खिलजी था।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- मलिक शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ऐबक का दामाद था, न कि उसका वंशज। इल्तुतमिश का शाब्दिक अर्थ राज्य का रक्षक स्वामी होता है।। उसका समानार्थक शब्द आलमगीर या जहाँगीर विश्व विजेता भी होता है।
- ऐबक की मृत्यु के समय इल्तुतमिश बदायूँ यू.पी. का इक्तेदार था।
- इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक तथा प्रथम वैधानिक सुल्तान था। जिसने दिल्ली को अपने राजधानी बनाया।
- इसने 1229 ई. में बगदाद के खलीफा अल-मुंतसिर-बिल्लाह से सुल्तान की उपाधि व खिलअत इजाजत प्राप्त की।
- इल्तुतमिश ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा मानक सिक्के टंका चलाया था। टंका चांदी का होता था (1 टंका =48 जीतल)
- इल्तुतमिश यह पहला मुस्लिम शासक था जिसने सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाया था।
- शहरों में इल्तुतमिश ने न्याय के लिए काजी, अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारी नियुक्त किये।

- इल्तुतमिश ने अपने 40 तुर्की सरदारों को मिलाकर तुर्कान-ए-चहलगामी नामक प्रशासनिक संस्था की स्थापना की थी।

इक्ता प्रणाली का संस्थापक -

- इल्तुतमिश ने प्रशासन में इक्ता प्रथा को भी स्थापित किया। भारत में इक्ता प्रणाली का संस्थापक इल्तुतमिश ही था। इक्ता का अर्थ है – धन के स्थान पर तनख्वाह के रूप में भूमि प्रदान करना ।
- इसने दोआब गंगा-यमुना क्षेत्र में हिन्दुओं की शक्ति तोड़ने के लिए शम्सीतुर्की उच्च वर्ग सरदारों को ग्रामीण क्षेत्र में इक्तायें जागीर बांटी।
- 1226 में रणथंभौर पर आक्रमण
- 1227 में नागौर पर आक्रमण
- 1232 में मालवा पर आक्रमण - इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश उज्जैन से विक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर लाया था।
- 1235 में ग्वालियर का अभियान -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों की बजाय पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।
- 1236 ई. में बामियान अफगानिस्तान पर आक्रमण । यह इल्तुतमिश का अंतिम अभियान था।
- इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये ।
- इल्तुतमिश के दरबार में मिन्हाज-उस-सिराज मलिक दाजुद्दीन को संरक्षण मिला ।
- अजमेर की मस्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था ।
- इल्तुतमिश से सम्बन्धित 'हश्म-ए-कल्ब 'या कल्ब-ए-सुल्तानी सुल्तान द्वारा स्थापित सेना को कहा जाता था ।
- इल्तुतमिश को भारत में गुम्बद निर्माण का पिता कह जाता है उसने सुल्तानगढ़ी का निर्माण करवाया ।

निर्माण कार्य-

- स्थापत्य कला के अन्तर्गत इल्तुतमिश ने कुतुबुद्दीन ऐबक के निर्माण कार्य कुतुबमीनार को पूरा करवाया। भारत में सम्भवतः पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है ।
- इल्तुतमिश ने बदायूँ की जामा मस्जिद एवं नागौर में अतारकिन के दरवाजा का निर्माण करवाया। उसने दिल्ली में एक विद्यालय की स्थापना की।

मृत्यु -

- बयाना पर आक्रमण करने के लिए जाते समय मार्ग में इल्तुतमिश बीमार हो गया। इसके बाद इल्तुतमिश की बीमारी बढ़ती गई। अन्ततः अप्रैल 1236 में उसकी मृत्यु हो गई।
- इल्तुतमिश प्रथम सुल्तान था, जिसने दोआब के आर्थिक महत्व को समझा था और उसमें सुधार किया था।
- इल्तुतमिश का मकबरा दिल्ली में स्थित है जो एक कक्षीय मकबरा है ।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई).

- सुल्ताना रजिया (उसका पुरा नाम'जलॉलात उद-दिन-रजिया था)का जन्म -1205 ई. में बदायूँ में हुआ था, उसने उमदत -उल -निस्वाँ की उपाधि ग्रहण की ।
- रजिया ने पर्दा प्रथा को त्यागकर पुरुषों के समान काबा चोगा पहनकर दरबार की कारवाई में हिस्सा लिया।
- दिल्ली की जनता ने उसे 'रजिया सुल्तान' मानकर दिल्ली की गद्दी पर बैठा दिया। हालांकि वजीर जुनैदी उससे प्रसन्न नहीं था इसलिए इस समय उसने ही रजिया के सिंहासनारोहरण का विरोध किया। रजिया ने उसके बाद वजीर का पद ख्वाजा मुहाजबुद्दीन को दिया।
- वह दिल्ली सल्तनत की पहली एवं आखिरी मुस्लिम महिला शासिका थी।
- 'सुल्तान रजियत अल दुनिया वाल दीन बिन्त अल सुल्तान' के रूप में सिक्के ढाले गये।
- शासक बनने पर रजिया ने उदमत-उल-निस्वां की उपाधि धारण की।
- रजिया ने प्रथम अभियान 'रणथम्भौर' पर किया तदुपरान्त ग्वालियर पर हमला किया गया। हालांकि दोनों अभियान असफल रहे।
- रजिया ने महिला वस्त्र त्यागकर पुरुषों के वस्तु काबा (कुर्ता) एवं कुलाह(पगड़ी) धारण करने लगी।
- रजिया ने अल्तुनिया से शादी कर ली। अक्टूबर 1240 ई. में कैथल में डकैतों ने रजिया एवं अल्तुनिया की हत्या कर दी। और इस तरह 3 वर्ष 6 माह और 6 दिन तक शासन करने वाली रजिया का अन्त हुआ।''

मुइजुद्दीन बहरामशाह (1240-1242 ई)

- बहरामशाह एक मुस्लिम तुर्की शासक था, जो दिल्ली का सुल्तान था। बहरामशाह गुलाम वंश का था। रजिया सुल्तान को अपदस्थ करके तुर्की सरदारों ने मुइजुद्दीन बहराम शाह को दिल्ली के तख्त पर बैठाया (1240-1242 ई)
- यह इल्तुतमिश का पुत्र तथा रजिया का भाई था।

अलाउद्दीन मसूद शाह (1242-1246 ई)

- मसूद का शासन तुलनात्मक दृष्टि से शांतिपूर्ण रहा। इस समय सुल्तान तथा सरदारों के मध्य संघर्ष नहीं हुए।
- वास्तव में यह काल बलबन की 'शांति निर्माण' का काल था।

नासिरुद्दीन महमूद (1246-1265 ई)

- यह एक तुर्की शासक था, जो दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना। यह भी गुलाम वंश से था।
- महमूद के शासनकाल में समस्त शक्ति बलबन के हाथों में थी। प्रारंभ में बलबन चहलगामी का सदस्य था।
- बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह नासिरुद्दीन महमूद से कर दिया। सुल्तान ने बलबन को सेना पर पूर्ण नियंत्रण के साथ नायब-ए-ममलिकात का पद दिया।
- सद्र-उस-सुदूर धार्मिक विभाग से संबंधित है ।
- अमीर-एक-आखूर अश्वशाला का प्रधान होता था ।
- सर-ए-जानदार सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रमुख होता था ।

ग्यासुद्दीन बलबन 1266-1287

- बलबन ने बलबनी वंश की स्थापना की ।
- इल्तुतमिश ने बलबन को ग्वालियर विजय के बाद खरीदा और उसकी योग्यता से प्रभावित हो कर उसे खासदार का पद सौंपा दिया।
- बलबन ने गद्दी पर बैठते ही सर्वप्रथम सुल्तान के पद की गरिमा कायम की और दिल्ली सल्तनत की सुरक्षा के प्रबंध किया ।
- जो इल्तुतमिश ने चालीसा दल बनाया था उसे बलबन ने नष्ट कर दिया।
- बलबन दिल्ली सल्तनत का एक पहला ऐसा व्यक्ति था, जो सुल्तान न होते हुए भी सुल्तान के छत्र का प्रयोग करता था
- बलबन पहला शासक था जिसने सुल्तान के पद और अधिकारों के बारे में विस्तृत रूप से विचार प्रस्तुत किये।
- वह कुरान के नियमों को शासन व्यवस्था का आधार मानता था उसके अनुसार सुल्तान पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि होता है ।
- बलबन ने सुल्तान की प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए "रक्त और लौह नीति" अपनाई ।
- बलबन ने कहा कि सुल्तान का पद ईश्वर के समान होता हैं तथा सुल्तान का निरंकुश होना जरूरी है।
- बलबन के अनुसार राजा को शक्ति ईश्वर से प्राप्त होती हैं इसलिए उसके कार्यों की सार्वजनिक जाँच नहीं की जा सकती।
- बलबन ने ईरानी परम्पराओं के अनुसार कई परम्पराएँ आरंभ करवाई उसे "सिजदा" (भूमि पर लेट कर अभिवादन करना (और'पैबोस' (सुल्तान के चरणों को चूमना (जैसी व्यवस्था भी लागू की जिनका उद्देश्य साफ तौर पर सुल्तान की प्रतिष्ठा में वृद्धि करना था।
- बलबन ने फारसी रहन-सहन की परम्पराओं को भी अपनाया उसने अपने पौत्रो के नाम भी फारसी सम्राटों की तरह कैकुबाद, कैखुसरों आदि रखे ।
- दीवान-ए-कोही कृषि के विकास के लिए एक विभाग होता था ।
- दीवान-ए-कजा यह न्याय विभाग से संबंधित था ।
- दीवान-ए-बरीद यह गुप्तचर विभाग से संबंधित था ।
- दीवान-ए-अर्ज सैन्य विभाग से संबंधित है ।
- सल्तनत काल में सुल्तान को सहायता प्रदान करने के लिए गठित मंत्रिपरिषद् को मजलिस-ए-खलवत के नाम से जाना जाता था ।
- दिल्ली सल्तनत में निरंकुश राजतंत्र की स्थापना बलबन ने की थी ।
- बलबन के दरबार में प्रत्येक वर्ष ईरानी त्यौहार 'नौरोज' काफी धूमधाम से मनाया जाता था इसकी शुरुआत बलबन के समय से ही हुई।
- बलबन ने नवरोज उत्सव शुरू करवाया, जो फारसी)ईरानी (रीति-रिवाज पर आधारित था।
- बलबन के दरबार में फारसी के प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरों-ऐ-अमीर हसन् रहते थे अमीर खुसरों ने अपना साहित्यक जीवन शहजादा मुहम्मद के संरक्षण में शुरू किया ।
- बलबन ने चालीसा का दमन कर दिया क्योंकि यही संस्था राजनीतिक अस्थिरता के लिए उत्तरदायी थी।
- चालीसा द्वारा इल्तुतमिश के बाद के 30 वर्षों में उसके वंश के 5 शासक बनाये गये और मारे गये। यह साजिश का केन्द्र था और इसी के कारण सुल्तान का पद गौरवहीन था।

लॉर्ड वेवेल (1944 - 1947):-

- सी-राजगोपालाचारी द्वारा C.R.फार्मूला प्रस्तुत करना और इस पर 1944 ई. में गांधी-जिन्ना वार्ता की असफलता।
- 1945 ई. में वेवेल योजना और इस पर विचार करने के लिए शिमला सम्मेलन और इसकी असफलता।
- I.N.A. पर मुकदमा और 1946 में नौ सनिक विद्रोह।
- 1946 ई. में पैथिक लॉरेंस, सर स्टेफोर्ड क्रिप्स और एलेक्जेंडर तीन सदस्यों कैबिनेट मिशन तथा काँग्रेस और लीग दोनों द्वारा इसकी स्वीकृति।
- 17 अगस्त 1946 ई. को लीग द्वारा 'डायरैक्ट एक्शन डे' की शुरुआत, लैकिन अक्टूबर 1946 ई. में इसका अंतरिम सरकार में शामिल हो जाना। यह संवेधानिक सभा से अलग था।
- सितंबर 1946 ई. को काँग्रेस द्वारा अंतरिम सरकार का गठन।
- 1946 ई. में कैबिनेट मिशन भारत आया।
- ब्रिटेन के लेबर पार्टी के तत्कालीन प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने भारत को जून 1948 ई. के पहले स्वतंत्र करने की घोषणा की।

लॉर्ड माउंटबेटन मार्च -अगस्त 1947-1948):-

- माउंटबेटन योजना।
- भारत का विभाजन।
- स्वतंत्रता की प्राप्ति।

Do You know:-

- बंगाल का प्रथम गवर्नर-रॉबर्ट क्लाइव
- बंगाल का अतिम गवर्नर-वारेन हेस्टिंग्स
- बंगाल का प्रथम गवर्नर-जनरल -वारेन हेस्टिंग्स
- बंगाल का अंतिम गवर्नर-जनरल -विलियम बैंटिक
- भारत का प्रथम गवर्नर-जनरल -विलियम बैंटिक
- भारत का अंतिम गवर्नर-जनरल -लॉर्ड कैनिंग
- भारत के प्रथम वायसराय -लॉर्ड कैनिंग
- भारत के अंतिम वायसराय -लॉर्ड माउंटबेटन
- स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर-जनरल -लॉर्ड मउंटबेटन
- भारत का प्रथम भारतीय गवर्नर-जनरल-सी. राजगपालचारी

Note :-

- 1858 से भारत के गवर्नर-जनरल को गवर्नर-जनरल तथा वयसराय दोनों नामों से जाना जाने लगा।

अध्याय - 4

1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन

राजनीतिक - धार्मिक आंदोलन

फकीर विद्रोह (1776-77)

- यह विद्रोह बंगाल में विचरणशील मुसलमान धार्मिक फकीरों द्वारा किया गया था।
- इस विद्रोह के नेता मजनू शाह ने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देते हुए जमीदारों और किसानों से धन इक्कठा करना आरम्भ कर दिया।
- मजनू शाह की मृत्यु के बाद चिराग अली शाह ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।

सन्यासी विद्रोह (1770 - 1820)

- संन्यासी विद्रोह भारत की आज़ादी के लिए बंगाल में अंग्रेज़ हुकूमत के विरुद्ध किया गया एक प्रबल विद्रोह था।
- संन्यासियों में अधिकांश शंकराचार्य के अनुयायी थे।
- इतिहास प्रसिद्ध इस विद्रोह की स्पष्ट जानकारी बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास 'आनन्दमठ' में मिलती है।

पागलपंथी विद्रोह (1813 - 33)

- उत्तर पूर्वी भारत में प्रभावी पागलपंथी एक धार्मिक पंथ था।
- उत्तर पर्वी क्षेत्र में हिन्दू मुसलमान और गारो तथा जांग आदिवासी इस पंथ के समर्थक थे।
- इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा क्रियान्वित भू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था के कारण व्यापक असंतोष था।
- इस विद्रोह को 1833 ई. में दबा दिया गया।

वहाबी आंदोलन (1820 - 70)

- वहाबी आंदोलन मूलतः एक इस्लामिक सुधारवादी आंदोलन था। जिसने कालांतर में मुस्लिम समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवं कुरुतियों के उन्मूलन को अपना उद्देश्य बनाया।
- इस आंदोलन के संस्थापक अब्दुल वहाबी के नाम पर इसका नाम वहाबी आंदोलन पड़ा।
- सैयद अहमद बरेलवी ने भारत में इस आंदोलन को प्रेरणा प्रदान की

कूकाविद्रोह

- कूका विद्रोह की शुरुआत पंजाब में 1860-1870 ई. में हुई थी।
- पश्चिमी पंजाब में 'कूका विद्रोह' की शुरुआत लगभग 1840 ई. में 'भगत जवाहर मल' द्वारा की गयी थी।
- भगत जवाहर मल को 'सियान साहब' के नाम से भी जाना जाता था।
- 1872 ई. में इसके एक नेता 'रामसिंह' को रंगून निर्वासित कर दिया और आंदोलन पर नियंत्रण पा लिया गया।

समोसी विद्रोह

- समोसी मराठा राज्य के अधीनस्थ कर्मचारी थे। अत्यधिक लगान वसूली के कारण 1822 में उन्होंने विद्रोह कर दिया।

गडकरी विद्रोह

- गडकरी विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ किया गया था।
- 1845 ई. में महाराष्ट्र में 'गड़करी जाति' के विस्थापित सैनिकों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध इस विद्रोह को अंजाम दिया।

सावंतवादी विद्रोह

- प्रवासीवादी विद्रोह: प्रवासीवादी विद्रोह भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ शुरू किया गया था।
- प्रवासीवादी विद्रोह 1845 में हुआ था।
- प्रवासीवादी विद्रोह का नेतृत्व मराठा सरदार फोन्ड सावन्त ने किया था।

मुंडा एवं हो विद्रोह (1820-22)
कोल विद्रोह (1831)

- 1831 में छोटा नागपुर में यह कोल विद्रोह हुआ
- इस विद्रोह का प्रमुख कारण कोल आदिवासियों की जमीन छीनकर मुस्लिम और सिख संप्रदाय के किसानों को दे दी इस विद्रोह में गंगा नारायण और बुद्धो भगत ने भूमिका निभाई।
- यह विद्रोह मुख्य रूप से रांची हजारीबाग पलामू मानभूम और सिंह भूमि क्षेत्र में फैला।

संथाल विद्रोह (1855)

- सन् 1855 ईस्वी में जमींदार और साहूकारों के अत्याचार और भूमि कर अधिकारियों के दमनात्मक व्यवहार के प्रति सिद्धू एवं कान्हू के नेतृत्व में राजमहल एवं भागलपुर के संस्थान आदिवासियों ने विद्रोह कर दिया।

चुआर विद्रोह (1798)

- दुर्जन सिंह तथा जगन्नाथ के नेतृत्व में बंगाल के मिदनापुर जिले में 1798 ईस्वी में यह विद्रोह हुआ।
- इस विद्रोह का मुख्य कारण भूमि कर एवं अकाल के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट था इस विद्रोह में यह विद्रोह रुक रुक कर 30 वर्षों तक चला।

खासी विद्रोह

- भारत के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में जब अंग्रेजों ने खासी की पहाड़ियों से लेकर सिलहट के बीच सड़क मार्ग बनाना प्रारंभ किया तो स्थानीय लोगों ने इसे ब्रिटिश राज्य का उनकी स्वतंत्रता पर हस्तक्षेप मानते हुए विद्रोह किया।

अहोम आदिवासी विद्रोह (1828)

- यह ब्रिटिश सरकार ने 1828 ईस्वी में असम राज्य के अहोम प्रदेश को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का प्रयत्न किया तो अहोम आदिवासियों ने गोमधर कुंवर के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया

फरायजी विद्रोह (1838)

- बंगाल के फरीदपुर नामक स्थान पर फरायजी संप्रदाय के अनुमोदन पर शरीयातुल्ला ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया

पश्चिम भारत के प्रमुख आदिवासी विद्रोह
भील विद्रोह (1818)

- 1818 में भील विद्रोह का प्रारंभ हुआ यह भारत के पश्चिमी क्षेत्र में हुआ।
- इस विद्रोह का मुख्य कारण कृषि से संबंधित परेशानियां और अंग्रेजों द्वारा लगाए जाने वाले टैक्स थे।
- 1825 ईस्वी में सेवाराम के नेतृत्व में भीलों ने पुनः विद्रोह किया कार 1846 ई. तक भील विद्रोह चलता रहा,
- भील विद्रोह को भड़काने का आरोप ईस्ट इंडिया कंपनी ने पेशवा बाजीराव द्वितीय और त्र्यंबक जी पर लगा दिया।

बघेरा विद्रोह

- यह विद्रोह ओखा मंडल के बघेरा लोगों द्वारा सन् 1818 से 1819 ई. तक बड़ौदा की गायकवाड़ राजा द्वारा किया गया

किट्टूर विद्रोह

- किट्टूर के स्थानीय शासक की विधवा रानी चेन्नमा ने किया क्योंकि अंग्रेजों ने राजा के दत्तक पुत्र को मान्यता नहीं दी
- यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक कार्यवाही द्वारा इस विद्रोह को दबा दिया यह विद्रोह 1824 से 1829 ईस्वी तक चला

कच्छ विद्रोह (1819)

- कच्छ के राजा भारमल को अंग्रेजों द्वारा शासन से बेदखल करना कच्छ विद्रोह का मुख्य कारण था।
- अंग्रेजों ने कच्छ के अल्प वयस्क पुत्र को वहां का शासक बना दिया और भू - कर में वृद्धि कर दी इसका विरोध स्वरूप भारमल और उसके समर्थकों ने 1819 में यह विद्रोह शुरू कर दिया

भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह

पॉलीगार विद्रोह 1801

- तमिलनाडु में नई भूमि व्यवस्था लागू करने के बाद ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सन् 1801 ईस्वी में वहां के स्थानीय पॉली वालों ने वीपी कट्टा बामन्नान के नेतृत्व में विद्रोह किया गया और यह विद्रोह 1856 ईस्वी तक चला।

पाइक विद्रोह (1817)

- मध्य उड़ीसा में पाइक जनजाति द्वारा सन् 1817 ईस्वी से 1825 ईस्वी तक यह विद्रोह किया इस विद्रोह के नेतृत्व कर्ता बख्शीजग बंधु ने किया

सूरत का नमक विद्रोह (1817)

- अंग्रेजों द्वारा नमक के कर में 50 पैसे की वृद्धि करने पर इसका विरोध करने के लिए 1844 ईस्वी में सूरत के स्थानीय लोगों ने यह विद्रोह किया इस विद्रोह के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने बढ़ाए नमक करों को वापस ले लिया

नागा विद्रोह(1931)

- नागा विद्रोह रोंगमइ जदोनांग के नेतृत्व में भारत के पूर्वी राज्य नागालैंड में हुआ।
- नाग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य नागा राज्य की स्थापना करके प्राचीन धर्म को स्थापित करना था इस आंदोलन की बागडोर एक नागा महिला गौंडिनल्यू ने अपने हाथों में ले ली।

खंड एवं सवार विद्रोह (1837)

- खंड एवं सवार विद्रोह 1837 ईस्वी से लेकर 1856 ईस्वी तक बंगाल तमिलनाडु तथा मध्य भारत में रहने वाली खोंड तथा सवार नामक जनजातियों द्वारा चलाया गया
- इस विद्रोह का मुख्य कारण अंग्रेजी सरकार द्वारा नरबलि पर रोक तथा नए कर लगाना था।

युआन जुआंग विद्रोह (1867)

- युआन विद्रोह 1867 ई. ने रतन नायक के नेतृत्व में क्योंझर में हुआ था
- क्योंझर के राजा के राज्य अभिषेक पर युआन सरदारों को उपस्थित होना अनिवार्य था।
- इस प्रथा को अंग्रेज सरकार द्वारा एकदम से समाप्त कर दिया जिससे क्योंझर राज्य में यह विद्रोह भड़क गया।

खोण्डा डोरा विद्रोह (1900)

- खोण्डा डोरा विद्रोह विशाखापट्टनम के डाबर क्षेत्र में सन् 1900 में खोण्डा डोरा नामक जनजाति द्वारा प्रारंभ किया गया
- इस विद्रोह के नेतृत्वकर्ता कोरा मलैया थे कोरा मलैया ने स्वयं को पांडवों का अवतार तथा अपने पुत्र को श्री कृष्ण का अवतार बताया।

विजय नगर का विद्रोह (1765)

दीवान बेलाटम्पी का विद्रोह(1805)

खामती विद्रोह(1843)

कोया विद्रोह (1879)

- कोया विद्रोह दो चरणों में हुआ पहले चरण का नेतृत्व टेम्पा सोरा ने किया और द्वितीय चरण में राजन अनंत शैय्यार नेतृत्व किया।
- कोया आंदोलन गोदावरी के पूर्वी क्षेत्र में रम्पा प्रदेश में शुरू हुआ।
- इस कोया विद्रोह का मुख्य कारण आदिवासियों के जंगल संबंधी प्राकृतिक अधिकारों को अंग्रेजों द्वारा

- इसने भारत में ब्रिटिश राज को समाप्त कर दिया, 15 अगस्त 1947 को इसे स्वतंत्र एवं सम्प्रभु राष्ट्र घोषित कर दिया ।
- इस अधिनियम ने भारत का विभाजन कर दो स्वतंत्र राष्ट्र भारत और पाकिस्तान का सृजन किया।
- इस कानून ने ब्रिटेन में भारत सचिव का पद समाप्त कर दिया ।
- इसने 15 अगस्त 1947 से भारतीय रियासतों पर ब्रिटिश संप्रभु को समाप्ति की घोषणा की ।
- इस अधिनियम ने शाही उपाधि से 'भारत का सम्राट' शब्द समाप्त कर दिया।
- 1935 के भारत शासन अधिनियम द्वारा शासन जब तक संविधान सभा द्वारा नया संविधान बनकर तैयार नहीं किया जाता तब तक उस समय 1935 के भारतीय शासन अधिनियम के द्वारा ही शासन किया जायेगा ।
- देशी रियासतों पर से ब्रिटेन की सर्वोपरिता का अंत कर दिया ।

स्वतंत्र भारत का पहला मंत्रीमण्डल (1947)

1.	जवाहर लाल नेहरू	-	प्रधानमंत्री, राष्ट्रमण्डल तथा विदेशी मामलों
2.	सरदार वल्लभभाई पटेल	-	गृह, सुचना एवं प्रसारण, राज्यों के मामले
3.	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	-	खाद्य एवं कृषि
4.	मौलाना अबुल कलाम आजाद	-	शिक्षा
5.	डॉ. जॉन मथाई	-	रेलवे एवं परिवहन
6.	आर. के. षणमुगम शेट्टी	-	वित्त
7.	डॉ. बी. आर. अम्बेडकर	-	विधि
8.	जगजीवन राम	-	श्रम
9.	सरदार बलदेव सिंह	-	रक्षा
10.	राजकुमारी अमृतकौर	-	स्वास्थ्य
11.	सी. एच. भाभा	-	वाणिज्य
12.	रफी अहमद किदवई	-	संचार
13.	डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी	-	उद्योग एवं आपूर्ति
14.	वी. एन. गाडगिल	-	कार्य, खान एवं ऊर्जा

अध्याय – 2

संविधान सभा

- भारत में संविधान सभा के गठन का विचार वर्ष 1934 में पहली बार एम. एन. रॉय ने रखा ।
- 1935 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पहली बार भारत के संविधान निर्माण के लिए आधिकारिक रूप से संविधान सभा के गठन की मांग की ।
- 1938 में जवाहर लाल नेहरू ने घोषणा की स्वतंत्र भारत के संविधान का निर्माण वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनी गई संविधान सभा द्वारा किया जायेगा । नेहरू की इस मांग को ब्रिटिश सरकार ने सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया। इसे 1940 के अगस्त प्रस्ताव के रूप में जाना जाता है।
- क्रिप्स मिशन 1946 में भारत आया ।

क्रिप्स मिशन

- लॉर्ड सर पैथिक लॉरेंस (अध्यक्ष)
- ए. वी. अलेक्जेंडर
- सर स्टेफोर्ड क्रिप्स
- 1946 ई. को ब्रिटेन के प्रधान मंत्री क्लीमेंट एटली ने ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीन सदस्य (सर स्टेफोर्ड क्रिप्स, लॉर्ड पैथिक लॉरेंस तथा ए. वी. अलेक्जेंडर) को भारत भेजा जिसे कैबिनेट मिशन कहा गया ।
- कैबिनेट का मुख्य कार्य संविधान सभा का गठन कर भारतीयों द्वारा अपना संविधान बनाने का कार्य करना था ।
- भारत में जवाहर लाल नेहरु की अध्यक्षता में अंतरिम सरकार का गठन कैबिनेट मिशन योजना के तहत किया गया था । अंतरिम मंत्रिमंडल अंग इस प्रकार था ।

अंतरिम सरकार

जवाहर लाल नेहरू - स्वतंत्र भारत का पहला मंत्रिमंडल (1947)
सरदार वल्लभभाई पटेल - गृह, सूचना एवं प्रसारण
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद - खाद्य एवं कृषि
जॉन मथाई - उद्योग एवं नागरिक आपूर्ति
जगजीवन राम - श्रम
सरदार बलदेव सिंह - रक्षा
सी. एच. भाभा - कार्य, खान एवं ऊर्जा
लियाकत अली खां - वित्त
अब्दुर रख निश्तार - डाक एवं वायु

आसफ अली	-	रेलवे एवं परिवहन
सी. राजगोपालाचारी	-	शिक्षा एवं कला
आई. आई. चुंदरीगर	-	वाणिज्य
गजनफर अली खान	-	स्वास्थ्य
जोगेंद्र नाथ मंडल	-	विधि

- कैबिनेट मिशन द्वारा प्रस्तुत किए गए सुझावों के अनुसार नवंबर 1946 में संविधान सभा का गठन हुआ। मिशन की योजना के अनुसार संविधान सभा का स्वरूप निम्नलिखित प्रकार का होना था –
- संविधान सभा के कुल सदस्यों की संख्या 389 होनी थी। इनमें से 296 सीटें ब्रिटिश भारत के प्रांतों को और 93 सीटें देशी रियासतों को दी जानी थी।
- हर ब्रिटिश प्रांत एवं देशी रियासत को उसकी जनसंख्या के अनुपात में सीटें दी जानी थी। आमतौर पर प्रत्येक 10 लाख लोगों पर एक सीट का आवंटन होना था।
- प्रत्येक ब्रिटिश प्रांत को दी गई सीटों का निर्धारण तीन प्रमुख समुदायों के मध्य उनकी जनसंख्या के अनुपात में किया जाना था। यह तीन समुदाय थे :- मुस्लिम, सिख व सामान्य (मुस्लिम और सिख को छोड़कर)।
- देशी रियासतों के प्रतिनिधियों का चयन चुनाव द्वारा नहीं, बल्कि रियासत के प्रमुखों द्वारा किया जाना था।
- कैबिनेट योजना के अनुसार ब्रिटिश भारत के लिए आवंटित 296 सीटों के लिए चुनाव जुलाई-अगस्त 1946 में संपन्न हुए।
- इस चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 208, मुस्लिम लीग को 73 तथा छोटे दलों व निर्दलीय सदस्यों को 15 सीटें मिली।
- महात्मा गाँधी और मोहम्मद अली जिन्ना को छोड़ दे तो संविधान सभा में उस समय के भारत के सभी प्रसिद्ध व्यक्तित्व शामिल थे।
- 9 दिसम्बर 1946 ई. को संविधान सभा की प्रथम बैठक हुई जिसमें मुस्लिम लीग ने भाग नहीं लिया।
- संविधान सभा का अधिवेशन 9 दिसम्बर 1946 को कन्द्रीय कक्ष में संपन्न हुआ। डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को सर्व सम्मति से संविधान सभा का अस्थायी अध्यक्ष चुन लिया गया।
- 11 दिसम्बर 1946 ई. को कांग्रेस के नेता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। जो की अन्त तक इसके अध्यक्ष बने रहे।

उद्देश्य प्रस्ताव :-

- 13 दिसम्बर 1946 को जवाहरलाल नेहरू ने सभा में उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया।
- संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को वर्तमान संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में हुई। मुस्लिम लीग ने इस बैठक का बहिष्कार कियाऔर अलग पाकिस्तान की मांग उठाई।
- सभा के सबसे वरिष्ठ सदस्य डॉ सच्चिदानंद सिन्हा को सभा का अस्थाई अध्यक्ष बनाया गया।
- 2 दिन पश्चात 11 दिसंबर 1946 को डॉ राजेंद्र प्रसाद को सभा का स्थाई अध्यक्ष बनाया गया, जो 22 जनवरी 1947 को संविधान सभा द्वारा स्वीकृत किया गया। संक्षेप में इस प्रस्ताव की मुख्य बातें निम्नलिखित थी :-
- भारत को एक स्वतंत्र तथा संप्रभु गणराज्य के रूप में स्थापित किया जाए।
- भारत के समस्त नागरिक को विचार, अभिव्यक्ति, संस्था बनाने, कोई व्यवसाय करने, किसी भी धर्म को मानने या न मानने कि स्वतंत्रता होगी।
- अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जातियों तथा पिछड़े वर्गों के हितों की सुरक्षा के लिए उपयुक्त रक्षा के उपाय किए जाएंगे।
- देश की एकता को स्थायित्व प्रदान किया जाएगा।
- यही उद्देश्य प्रस्ताव संविधान की 'प्रस्तावना' का आधार बना और इसी ने संपूर्ण संविधान के दर्शन को मूर्त रूप प्रदान किया।

संविधान सभा की कार्य प्रणाली

अस्थायी अध्यक्ष	-	सच्चिदानंद सिन्हा
अध्यक्ष	-	डा. राजेन्द्र प्रसाद
उपाध्यक्ष	-	डा. एच. सी मुखर्जी, व वी०टी० कृष्णामाचारी

संविधान सभा के अन्य कार्य

- मई 1949 में राष्ट्रमंडल में भारत की सदस्यता।
- 22 जुलाई 1947 को राष्ट्रीय ध्वज को अपनाया।
- 24 जनवरी 1950 को राष्ट्रगान को अपनाया।
- 26 जनवरी 1950 को राष्ट्रीय गीत को अपनाया।
- 24 जनवरी 1950 को राजेन्द्र प्रसाद को भारत के पहले राष्ट्रपति चुनना।
- 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में कुल 11 बैठके हुई, लगभग 60 देशों का संविधान का अवलोकन, इसके प्रारूप पर 114 दिन तक विचार हुआ कुल खर्च 64 लाख रुपया आया।
- 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा की अन्तिम बैठक हुई।

संविधान सभा की समितियां

संघ शक्ति समिति - जवाहर लाल नेहरू
संघीय संविधान समिति - जवाहरलाल नेहरू
प्रांतीय संविधान समिति - सरदार वल्लभ भाई पटेल
प्रारूप समिति - डॉ. बी. आर. अंबेडकर
मौलिक अधिकारी, अल्पसंख्यको एवं जनजातियो तथा बहिष्कृत क्षेत्रो के लिए सलाहकार समिति - सरदार पटेल
प्रक्रिया नियम समिति - डॉ. राजेंद्र प्रसाद
राज्यों के लिए समिति - जवाहरलाल नेहरु
संचालन समिति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

प्रारूप समिति

- अम्बेडकर (अध्यक्ष)
- एन गोपालस्वामी आयंगार
- अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर
- डॉ. के. एम मुंशी
- सैयद मोहम्मद सादुल्ला
- एन. माधव राव (बी. एल. मिल की जगह)
- टी. टी. कृष्णामाचारी (डी.पी खेतान की जगह)
- 4 नवम्बर 1948 को अंबेडकर ने सभा में संविधान का अन्तिम प्रारूप पेश किया गया । इस बार संविधान पहली बार पढ़ा गया ।
- संविधान सभा के 299 सदस्यों में से 284 लोगों ने संविधान पर हस्ताक्षर किया।
- 26 नवम्बर 1949 को अपनाए गये संविधान में प्रस्तावना, 395 अनुच्छेद व 8 अनुसुचियां थी। संविधान सभा द्वारा हाथी का प्रतीक (मुहर) के रूप में अपनाया ।
- सर वी० एन. राव संवैधानिक सलाहकार के रूप में नियुक्त किया गया था।

संविधान निर्माण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण व्यक्ति

- एच. वी. आर अय्यंगार (सचिव)
- एल.एन. मुखर्जी (चीफ ड्राफ्टमैन)
- प्रेम बिहारी नारायण (सुलेखक)
- मंदलाल बोस और विउहर (मूल संस्करण का सजावट और सौन्दर्यीकरण)
- संविधान सभा में अम्बेडकर का पहली बार निर्वाचन बंगाल से तथा देश बंटवारे के बाद उनका निर्वाचन बॉम्बे से हुआ ।

अध्याय – 3

संविधान की विशेषताएं

- **भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान** है जिसमें एक प्रस्तावना, 395 अनुच्छेद 22 भाग, 8 अनुसूचियां थी,
- वर्तमान में 465 अनुच्छेद 25 भाग 12 अनुसूचियां हैं।
- अमेरिका का संविधान सबसे छोटा लिखित संविधान है ।
- अलिखित (ब्रिटेन)

- भारत में संसदीय प्रणाली लागू है। जो ब्रिटेन से ली गई है।
- अमेरिका में अध्यक्षीय प्रणाली लागू है।
- संविधान की प्रस्तावना को संविधान की कुंजी कहा जाता है ।
- प्रस्तावना संविधान का आरम्भिक अंग होते हुए भी कानूनी तौर पर उसका भाग नही माना जाता है ।
- प्रस्तावना के अनुसार संविधान के अधीन समस्त शक्तियों का केंद्रबिंदु अथवा स्त्रोत भारत के लोग ही हैं ।
- प्रस्तावना में लिखित शब्द यथा हम भारत के लोग इस संविधान को अंगीकृत अधिनियमित और आत्मसमर्पण करते हैं । लिखित संविधान की अवधारणा फ्रांस की देन है ।
- भारतीय संविधान अंशतः कठोर और अंशतः लचीला है ।
- भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में संविधान सर्वोच्च है । भारत का संविधान अपना प्राधिकार भारत की जनता से प्राप्त कर्ता है ।
- भारत के संविधान में संघीय शासन शब्द का प्रयोग कहीं भी नही किया गया है । संविधान में भारत को राज्यों का संघ घोषित किया गया है।
- भारत सरकार अधिनियम 1935 वह संवैधानिक दस्तावेज है जिसका भारतीय संविधान तैयार करने में गहरा प्रभाव पड़ा ।
- भारतीय संविधान के बड़े होने का कारण संघ तथा राज्यों का एकल संविधान
- भारत की न्यायपालिका एकीकृत एवं स्वतंत्र है।
- सुप्रीम कोर्ट (SC)
- 25 हाइकोर्ट (HC)
- अधीनस्थ कोर्ट (DC)

राज्य के नीति निदेशक तत्व

- यह तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

b) सामाजिक
c) गांधीवादी
d) उदार बौद्धिक

- उद्देश्य कल्याणकारी राज्य की स्थापना ।
- मिनर्वा मिल्स मामले 1980 में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि भारतीय संविधान की नीव मौलिक अधिकारो, नीति निदेशक सिद्धान्तों के संतुलन पर रखी गई है।

मौलिक कर्तव्य

- मूल संविधान में मौलिक कर्तव्यों का उल्लेख नहीं किया गया था ।
- स्वर्ण सिंह समिति की सिफारिश पर 1976 के 42वें संशोधन में जोड़ा गया ।
- 11 वां कर्तव्य 86 वें संशोधन 2002 में जोड़ा गया ।

एक धर्मनिरपेक्ष राज्य

- भारत का संविधान धर्मनिरपेक्ष है।
- प्रस्तावना में यह शब्द 42 वें संशोधन 1976 में जोड़ा गया ।

सार्वभौम वयस्क मताधिकार

- 1989 में 61वें संविधान संशोधन में 1988 के द्वारा मतदान करने की उम्र 21 से घटाकर 18 कर दी गई।

एकल नागरिकता

- भारतीय संविधान फ्रेडरल है और दो लक्षणो (एकल व संघीय) का प्रतिनिधित्व करता है। मगर इसमें केवल एक नागरिकता का प्राविधान है।
- अमेरिका में द्वि नागरिकता की व्यवस्था है।

स्वतंत्र निकाय

- E.C (निर्वाचन आयोग)
- CAG
- UPSC
- SPSC

आपातकालीन प्रबन्ध

- राष्ट्रीय आपात काल (Art - 352)
- राज्य में आपातकाल (Art - 356 या 65)
- वित्तीय आपातकाल (Art-360)
- आपातकाल के दौरान सत्ता केन्द्र के हाथ में होती है।

विस्तरी सरकार

- केन्द्र
- राज्य
- पंचायत
- भारतीय संविधान में दो स्तरीय राज व्यवस्था थी ।
- 1992 में 73वें 74वें संविधान संशोधन में तीन त्रिस्तरीय सरकार का प्राविधान किया ।

उद्देशिका (प्रस्तावना)

- सर्वप्रथम अमेरिकी संविधान में संविधान प्रस्तावना को सम्मिलित किया गया था ।
- संविधान की प्रस्तावना का विचार अमेरिका के संविधान से लिया गया है
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना पंडित नेहरू द्वारा बनाये गये 'उद्देश्य प्रस्ताव' पर आधारित है।
- संविधान सभा में उद्देश्य प्रस्ताव 13 दिसम्बर ,1946 को प्रस्तुत किया गया ।
- 42 वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा समाजवाद, धर्मनिरपेक्ष और अखंडता शब्द जोड़े गये ।
- एन. ए. पालकीवाला ने प्रस्तावना को संविधान का परिचय पत्र कहा ।
- अधिकार का स्त्रोत भारत की जनता होगी।
- भारत एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणतांत्रिक राज व्यवस्था वाला देश है।
- न्याय स्वतंत्रता व समता या समानता संविधान के उद्देश्य है।
- 26 नवम्बर 1949 (तिथि मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी 2006 विक्रमी) को संविधान सभा द्वारा संविधान को अंगीकृत किया गया
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना के शुरआती शब्द है 'हम, भारत के लोग '
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भारत को एक सार्वभौम, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, प्रजातांत्रिक गणतंत्र के रूप में घोषित किया गया है ।
- भारत के संदर्भ में धर्मनिरपेक्ष शब्द का सही अर्थ है -भारत में राज्य का कोई धर्म नहीं है ।
- प्रस्तावना में सम्मिलित सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय के तत्व 1917 की रूसी क्रांति से संबंधित हैं ।
- **समाजवादी (socialist), राष्ट्र की अखंडता (integrity) तथा पंथनिरपेक्ष(secular)** शब्द मूल प्रस्तावना में शामिल नहीं थे ।
- 42 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1976 के माध्यम से इन शब्दों को प्रस्तावना में जोड़ा गया ।
- पंथनिरक्षेप राज्य से आशय हैं (भारत के सन्दर्भ में) राज्य का अपना कोई धर्म नही होगा और राज्य सभी धर्मो का समान रूप से आदर करेगा।]
- प्रस्तावना में संशोधन

अध्याय – 15

पंचायती राज

- स्थानीय शासन 'महात्मा गाँधी' की संकल्पना राम राज्य या ग्राम स्वराज्य का परिष्कृत रूप है। गाँधीजी की इस संकल्पना को फलीभूत करने के लिए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 40 में राज्य सरकार को निर्देश दिए गए थे, जो 1993 में 73वें संविधान संशोधन के परिणामस्वरूप सम्भव हुआ।
- 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन 1993 के तहत स्थानीय शासन भारतीय परिसंघीय व्यवस्था में तीसरे स्तर की सरकार को सामने ला खड़ा किया।
- 'पंचायती राज' और 'नगरपालिका प्रणाली' को संवैधानिक अस्तित्व प्राप्त करने में एक लम्बा संघर्ष करना पड़ा।
- वर्ष 1956 में गठित बलवन्त राय मेहता समिति ने सर्वप्रथम पंचायती राज को स्थापित करने की सिफारिश की जिसे स्वीकार कर लिया गया साथ ही सभी राज्यों को इसे क्रियान्वित करने के लिए कहा गया।
- सर्वप्रथम राजस्थान के नागौर जिले में 2 अक्टूबर 1959 को पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने पंचायती राज की नींव रखी और उसी दिन इसे सम्पूर्ण राज्य (राजस्थान) में लागू कर दिया गया।
- किन्तु वाँछित सफलता प्राप्ति में कमी ने इस पर गम्भीरता से विचार करने के लिए मजबूर किया। अनेक समितियों का गठन किया गया, जिन्होंने अपनी सिफारिशों से पंचायती राज को मजबूती प्रदान की।

पंचायती राज व्यवस्था समितियाँ		
1.	बलवंत राय मेहता समिति	1957
2.	अशोक मेहता समिति	1977
3.	जी.वी.के. राव समिति	1985
4.	एल. एम. सिंघवी समिति	1986
5.	संथानम समिति	1962
6.	सादिक अली समिति	1964

पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा

- वर्ष, 1989 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने पंचायतों के सुधार व सशक्तिकरण में विशेष रुचि ली तथा एल. एम. सिंघवी समिति और थुमन समिति की सिफारिशों के आधार पर लोकसभा में 64वाँ संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तुत किया। जिसे लोकसभा द्वारा पारित कर दिया गया लेकिन राज्यसभा द्वारा अस्वीकार कर दिए जाने के कारण विधेयक समाप्त हो गया।
- तत्पश्चात्, वर्ष 1992 में पंचायत सम्बन्धी प्रावधान के लिए प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव द्वारा 73वाँ संविधान संशोधन विधेयक संसद में लाया गया, जिसे लोकसभा एवं राज्यसभा ने क्रमशः 22 एवं 23 दिसम्बर, 1992 को पारित कर दिया।
- 17 राज्यों की विधानसभाओं द्वारा अनुमोदित किए जाने के बाद 20 अप्रैल, 1993 को राष्ट्रपति ने इस विधेयक पर अपनी सहमति प्रदान कर दी। 24 अप्रैल, 1993 से 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम पूरे देश में लागू हो गया।
- 73वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 के पारित होने से देश के संघीय लोकतांत्रिक ढाँचे में एक नए युग का सूत्रपात हुआ और पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्राप्त हो गया।
- इस संविधान संशोधन द्वारा संविधान में भाग 9 को पुनः स्थापित कर 16 नए अनुच्छेद (अनुच्छेद-243 से अनुच्छेद 243 (O) तक) और 11वीं अनुसूची जोड़ी गई। इसके द्वारा पंचायतों के गठन, संरचना, निर्वाचन, सदस्यों की अर्हताएँ, पंचायतों की शक्तियाँ, प्राधिकार और उत्तरदायित्व आदि के लिए प्रावधान किए गए हैं।
- ग्यारहवीं अनुसूची में कुल 29 विषयों का उल्लेख है, जिन पर पंचायतों को विधि बनाने की शक्ति प्रदान की गई है।
- यह संशोधन अधिनियम 24 अप्रैल, 1993 को प्रवर्तित हुआ। इसलिए प्रत्येक वर्ष 24 अप्रैल को पंचायत दिवस (Panchayat Day) के रूप में मनाया जाता है।
- इस संशोधन अधिनियम का अभिपालन करने वाला प्रथम राज्य मध्य प्रदेश है। मध्य प्रदेश में सन् 1994 में पंचायत चुनाव आयोजित किए गए थे।

इस प्रकार, भारत में पंचायती राज शक्तियों के विकेन्द्रीकरण, प्रशासन में लोगों की भागीदारी तथा सामुदायिक विकास का प्रतिनिधित्व करता है।

अनुच्छेद 40 के तहत यह प्रावधान किया गया है कि राज्य ग्राम पंचायतों के गठन के लिए कदम उठाएगा और उन्हें स्वायत्त शासन की इकाई के रूप में कार्य करने के योग्य बनाने के लिए आवश्यक शक्तियाँ और अधिकार प्रदान करेगा। इस अधिनियम के प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित हैं।

पंचायतों का गठन और संरचना

- अनुच्छेद 243 (b) भारत में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का प्रावधन करता है। प्रत्येक राज्य में ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत, मध्यवर्ती स्तर पर क्षेत्र पंचायत और जिलास्तर पर जिला पंचायत के गठन का प्रावधान है, किन्तु उस राज्य में जिसकी जनसंख्या 20 लाख से कम है, वहाँ मध्यवर्ती स्तर पर पंचायतों का गठन करना आवश्यक नहीं है।
- भारत में पश्चिम बंगाल ऐसा राज्य है, जहाँ चार स्तरीय पंचायत व्यवस्था अपनाई गई है। वहाँ पंचायतों के चार स्तर यथा ग्राम पंचायत, अंचल पंचायत, आंचलिक परिषद् और जिला परिषद् हैं।
- अनुच्छेद 243 (c) में पंचायतों की संरचना के बारे में प्रावधान किया गया है। इसके तहत राज्य विधानमण्डल को विधि द्वारा पंचायतों की संरचना के सम्बन्ध में उपबंध करने की शक्ति प्रदान की गई है।
- परन्तु किसी भी स्तर पर पंचायत के प्रादेशिक क्षेत्र की जनसंख्या और ऐसी पंचायत में निर्वाचन द्वारा भरे जाने वाले स्थानों की संख्या में अनुपात समस्त राज्य में यथा संभव एक ही होगा।
- पंचायतों के सभी स्थान प्रादेशिक निर्वाचन क्षेत्रों से प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों द्वारा भरे जाएंगे।
- ग्राम पंचायत के अध्यक्ष का चुनाव राज्य द्वारा बनाई गई विधि के अनुसार होगा तथा मध्यवर्ती व जिला पंचायतों के अध्यक्ष का चुनाव उसके निर्वाचित सदस्यों द्वारा अपने में से किया जाएगा।

73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1993

- विभिन्न समितियों की सिफारिशों पर मनन चिन्तन के पश्चात् 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम (1993) अन्ततः विविध विशेषताओं के साथ पारित किया गया और 24 अप्रैल, 1993 से सम्पूर्ण भारत में लागू कर दिया गया
- वर्तमान में इस अधिनियम के तहत पूरे भारत में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को अपनाया गया है, पश्चिम बंगाल में चार स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को अपनाया गया है।
- पंचायती राज के सम्बन्ध में भारतीय संविधान का अनुच्छेद 243 में 243 (ण) विशेष उल्लेख करता है। पंचायती राज व्यवस्था की संरचना त्रिस्तरीय है।

पंचायती राज का पदसोपान

- 'जिलापरिषद्' स्थानीय ग्रामीण स्वशासन में शीर्ष पर स्थित है।
- शीर्ष स्तर पर जिलापरिषद्, मध्य स्तर पर पंचायत समिति, निम्न स्तर पर पंचायत, ग्राम सभा तथा ग्राम कचहरी ।

जिला परिषद्

जिला परिषद् स्थानीय स्वशासन की शीर्ष संस्था है, जो मध्य स्तर पर तथा ग्रामीण स्तर पर पंचायतों और प्रखण्ड समिति के मध्य समन्वयन स्थापित करता है ।

जिला परिषद् का गठन

- सामान्य तौर पर जिले की सभी पंचायत समितियों के प्रधान
- उस जिले के निर्वाचित संसद् तथा विधानसभा सदस्य
- जिला विकास अधिकारी
- महिलाओं तथा पिछड़े वर्गों के प्रतिनिधि सदस्य
- अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के प्रतिनिधि
- सहकारी बैंक का अध्यक्ष, सह सदस्य होते हैं।

पंचायत समिति

- पंचायती राज की त्रिस्तरीय संरचना में मध्य स्तर पर पंचायत समिति है। इसे पंचायत समिति, 'क्षेत्र समिति' तथा 'आंचलिक परिषद्' भी कहते हैं।
- पंचायत समिति का गठन सम्बन्धित ग्राम पंचायतों के प्रमुख कुछ महिला प्रतिनिधि, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के प्रतिनिधि से मिलकर होता है।
- कुछ राज्यों में कुछ सदस्य ग्राम सभा द्वारा चुने जाते हैं।
- पंचायत समिति की अध्यक्षता के लिए 'प्रमुख' का चुनाव किया जाता है। प्रमुख को 'प्रधान' तथा चेयरमैन के नाम से भी जाना जाता है।

- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में गरीबी का अध्ययन करने वाले सर्वप्रथम बी. एस. मिन्हास थे / उन्होंने ग्रामीणों के निर्धनता के प्रतिशत में कमी का संकेत वर्ष 1956 – 57 तथा 1967 – 68 में दिया गया था /

- पी. डी. ओझा, प्रणव वर्धन ने ग्रामीण निर्धनता के अनुपात में वृद्धि पर अध्ययन प्रस्तुत किया /

- **दांडेकर और रथ** ने गरीबी की परिभाषा भोजन से प्राप्त ऊर्जा के भाव को अपनाया।
  - ग्राम – 2400 Kcal, शहर में 2100 Kcal ऊर्जा गरीबी रेखा।
- नीलकांत दांडेकर एवं पी. एम रथ ने ग्रामीण एवं नगरीय स्तर पर पर गरीबी का अध्ययन वर्ष 1960 – 61 एवं वर्ष 1967 – 68 में प्रस्तुत किया /
- विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार ,भारत में 50 % से अधिक निर्धन चार राज्य बिहार ,उत्तर प्रदेश ,मध्य प्रदेश तथा ओडिशा में निवास करते हैं।
- ट्राईसेम(trisem) कार्यक्रम ग्रामीण विकास से संबंधित है।
- गरीबी उन्मूलन का नारा छठी पंचवर्षीय योजना में दिया गया था।
- बहुआयामी गरीबी सूचकांक(MPI) की गणना में परिवार को इकाई माना जाता है।
- भारत में गरीबी की गहनता की माप के लिए बहु-आयामी गरीबी सूचकांक मानदंड सबसे उपयुक्त है।

गरीबी के आकलन से संबंधित समीतियाँ
डॉ. वाई.के. अलघ समिति
सुरेश तेन्दुलकर समिति
अरविंद पनगड़ीया टास्क फोर्स
लकड़ावाला समिति
सी.रंगराजन समिति

- गरीब की आकलन विधि में सुधार हेतु एक विशेषज्ञ लकड़वाला ने लकड़वाला समिति का गठन 1993 में किया।

- समिति ने सिफारिश की कि –
- आय विधि के स्थान पर उपयोग विधि का उपयोग किया जाए।
- गरीबी की मौद्रिक परिभाषा में समायोजन के लिए WPI आधारित महंगाई के आंकड़े के स्थान पर CPI आधारित महंगाई के आंकड़े का उपयोग किया जाए।

विविध

महत्वपूर्ण दिवस

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दिवस 2022

जनवरी	समारोह की तिथि
विश्व ब्रेल दिवस	4 जनवरी
विश्व युद्ध अनाथ दिवस	6 जनवरी
प्रवासी भारतीय दिवस	09 जनवरी
राष्ट्रीय युवा दिवस	12 जनवरी
सड़क सुरक्षा सप्ताह	11 - 17 जनवरी
लाल बहादुर शास्त्री पुण्य-तिथि	11 जनवरी
सेना दिवस	15 जनवरी
NDRF स्थापना दिवस	19 जनवरी
सुभाष चन्द्र का जन्मदिन	23 जनवरी
पराक्रम दिवस	23 जनवरी
राष्ट्रीय बालिका दिवस	24 जनवरी
अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा दिवस	24 जनवरी
राष्ट्रीय मतदाता दिवस	25 जनवरी
राष्ट्रीय पर्यटन दिवस	25 जनवरी
गणतंत्र दिवस - 26 जनवरी	26 जनवरी
अंतर्राष्ट्रीय प्रलय स्मृति दिवस	27 जनवरी
लाला लाजपत राय जयंती	28 जनवरी
विश्व कुष्ठ उन्मूलन दिवस	शहीद दिवस
शहीद दिवस	30 जनवरी
फरवरी	**समारोह की तिथि**
भारतीय तटरक्षक दिवस	1 फरवरी

विश्व आद्रभूमि दिवस	1 फरवरी
विश्व कैंसर दिवस	4 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय मानव भ्रातृत्व दिवस	4 फरवरी
International day of Zero tolerance for female genital mutilation	6 फरवरी
International Epilepsy Day	8 फरवरी
सुरक्षित इंटरनेट दिवस	9 फरवरी
विश्व दाल दिवस	10 फरवरी
राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस	10 फरवरी
विज्ञान में बालिकाओं तथा महिलाओं का दिवस	11 फरवरी
विश्व यूनानी दिवस	11 फरवरी
राष्ट्रीय उत्पादकता दिवस	12 फरवरी
विश्व रेडियो दिवस	13 फरवरी
वेलेंटाइन्स डे	14 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय बचपन कैंसर दिवस	15 फरवरी
विश्व सामाजिक न्याय दिवस	20 फरवरी
विश्व पैंगोलिन दिवस	20 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	21 फरवरी
World thinking day	22 फरवरी
केंद्रीय उत्पाद शुल्क दिवस	24 फरवरी
संत रविदास जयंती	27 फरवरी
विश्व एनजीओ दिवस	27 फरवरी
राष्ट्रीय प्रोटीन दिवस	27 फरवरी
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फरवरी
दुर्लभ रोग दिवस	28 फरवरी

मार्च	**समारोह की तिथि**
विश्व नागरिक सुरक्षा दिवस	1 मार्च
कर्मचारी प्रशंसा दिवस	2 मार्च
विश्व श्रवण दिवस	3 मार्च
विश्व वन्यजीव दिवस	3 मार्च
राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस	4 मार्च
जनऔषधि दिवस	7 मार्च
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	8 मार्च
CISF स्थापना दिवस	10 मार्च
National Gestational Diabetes Mellitus (GDM) Awareness Day	10 मार्च
विश्व किडनी दिवस	11 मार्च
अंतर्राष्ट्रीय गणित दिवस	14 मार्च
International Day of Action for Rivers	14 मार्च
राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस	16 मार्च
ऑर्डनेंस फैक्ट्री डे	18 मार्च
Global Recycling Day	18 मार्च
विश्व निद्रा दिवस	19 मार्च
विश्व खुशहाली दिवस	20 मार्च
विश्व गौरैया दिवस	20 मार्च

वेनेजुएला	कराकस	बोलिवर
ओशिआनिया क्षेत्र के देश		
ऑस्ट्रेलिया	कैनबरा	डॉलर
फिजी	सूवा	डॉलर
न्यूजीलैंड	वेलिंग्टन	डॉलर

- **पुस्तक एवं लेखक**

पुस्तक और उनके लेखक 2022

1. "लॉकडाउन लिरिक्स" नामक पुस्तक संयुक्ता दास ने लिखी है। इस पुस्तक में कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के दौरान के अनुभवों और परेशानियों पर लिखी गई कविताओं का संग्रह है।
2. "द पॉवर ऑफ द बैलेट : ट्रवेल एंड ट्राइम्स इन द इलेक्शन्स की भूमिका सुनील अरोड़ा नए लिखी है। जबकि इस पुस्तक के लेखक उच्चतम न्यायालय के अधिवक्ता विपुल माहेश्वरी और पत्रकार अनिल माहेश्वरी है।
3. पुस्तक "बियॉन्ड द मिस्टी वेइल" पुस्तक की लेखिका आराधना जौहरी है। यह पुस्तक देश विदेश में उत्तराखंड के दिव्य मंदिरों के प्रमाणिक परिचय देती है।
4. "द मैकमोहन लाइन: ए सेंचुरी ऑफ डिस्कॉर्ड" नामक पुस्तक के लेखक जे जे सिंह है। इस पुस्तक के लेखक अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल और पूर्व सेनाध्यक्ष के पद पर जनरल जे जे सिंह रह चुके है। यह किताब भारत –चीन सीमा विवाद पर जनरल जे जे सिंह के अनुभवों और शोध पर आधारित है।
5. "टॉम्ब ऑफ सैंड" नामक पुस्तक के लेखक गीतांजलि श्री है। गीतांजलि श्री को उनके उपन्यास "Tomb of Sand" के लिए साल 2022 का अंतर्राष्ट्रीय बुकर प्राइज दिया गया है। ऐसा पहली बार है कि जब किसी हिंदी उपन्यास के लिए किसी लेखिका को दुनिया के प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय बुकर प्राइज से सम्मानित किया गया है। यह भारत के लिए बड़े गर्व की बात है। लेखिका और साहित्यकार गीतांजलि श्री का यह उपन्यास मूल रूप से हिंदी में "रेत समाधि" के नाम से प्रकाशित हुई थी और इसका अंग्रजी अनुवाद "Tomb of Sand" नाम से डेजी रॉकवेल ने किया है।
6. क्रंच टाइम : नरेंद्र मोदीन नेशनल सिक्योरिटी क्राइसिस पुस्तक के लेखक श्रीराम चौलिया है। यह पुस्तक चीन और पाकिस्तान के साथ संकट के दौरान पीएम मोदी की निर्णय लेने की श्रृंखला का विश्लेषण करती है।
7. हिंदी कविता संग्रह "मैं तो यहां हूं" के लेखक प्रो. रामदरश मिश्र है। हिंदी के विरिष्ठ कवि एवं लेखक "प्रो. रामदरश मिश्र" मिश्र को वर्ष 2021 के लिए 31 वें सरस्वती सम्मान के लिए चुना गया है। और इस पुस्तक का प्रकाशन वर्ष 2015 में हुआ था।
8. "नॉट जस्ट ए नाईटवॉचमैन : माई इनिंग्स विद BCCI" पुस्तक के लेखक विनोद राय है। यह पुस्तक विनोद राय ने लिखी है।
9. "बिरसा मुंडा –जनजाति नायक" पुस्तक के लेखक आलोक चक्रवाल है।
10. "पूर्वी भारत का सिख इतिहास" पुस्तक के लेखक अविनाश मोहपात्रा है। इस पुस्तक में बिहार, असम, बांग्लादेश, पश्चिम बंगाल , ओड़िसा, अरुणाचल प्रदेश , सिक्किम और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का सिख इतिहास शामिल है।
11. "द मैजिक ऑफ मंगलाजोड़ी" पुस्तक के लेखक अविनाश मोहापात्रा है। कॉफी टेबल बुक ""द मैजिक ऑफ मंगलाजोड़ी" पुस्तक के लेखक अविनाश मोहापात्रा है। इस पुस्तक में विभिन्न छवियों और विवरणों के माध्यम से चिल्का झील में मंगलाजोड़ी का एक विहंगम दृश्य प्रदान करती है।
12. "द मेवरिक इफेक्ट" पुस्तक के लेखक हरिश मेहता है। "द मेवरिक इफेक्ट" पुस्तक अनकही कहानी बताती है की कैसे 1970 और 80 के दशक में एक बैंड ऑफ ड्रीमर ने NASSCOM बनाने और भारत में आईटी क्रांति का मार्ग प्रशस्त करने के लिए हाथ मिलाया।
13. "टाइगर ऑफ द्रास : कैप्टन अनुज नैयर, 23 कारगिल हीरो" पुस्तक के लेखक मीना नैयर है। इस पुस्तक में कैप्टन अनुज नैयर (23 वर्ष) की कहानी है। जो 1999 के कारगिल युद्ध के दौरान द्रास सेक्टर को सुरक्षित करने के लिए लड़ते हुए

इरोड हल्दी	तमिलनाडु
कूर्ग अरेबिका कॉफी	कर्नाटक
वायनाड रोबस्टा कॉफी	केरल
चिकमगलूर अरेबिका कॉफी	कर्नाटक
अराकू वैली अरेबिका कॉफी	आंध्र प्रदेश व ओड़िशा
बाबू बूदन गिरि अरेबिका कॉफी	कर्नाटक
पेठापुर ब्लॉक प्रिंटिंग	गुजरात
डले खुर्सीनी (मशहूर मिर्च)	सिक्किम
सांगली हल्दी	महाराष्ट्र
शाही चीली (फल)	बिहार
अल्फोन्सो आम (फल)	महाराष्ट्र
जर्दालू आम / कतरनी चावल	बिहार
बोकासोल चावल, तेजपुर लीची	असम
कड़कनाथ मुर्गा	मध्य प्रदेश
अदीलाबाद द्रोका	तेलंगाना

भारत सरकार के 2022 के प्रमुख योजना :-

क्र. सं.	योजना
1.	अग्निपथ योजना
2.	प्रधानमंत्री प्रणाम योजना
3.	प्रधानमंत्री श्री योजना
4.	एक राष्ट्र एक उर्वरक योजना

<u>भारत का नया मंत्रिमंडल</u>

1. भारत के नए उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ बने हैं, यह भारत के 14 वें उपराष्ट्रपति नियुक्त हुए हैं।
2. भारत के 50 वें मुख्य न्यायाधीश CJI धनंजय यशवंत चंद्रचूड़ बने हैं।
3. भारत की पहली महिला आदिवासी राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू बनी हैं। और यह भारत की 15 वीं राष्ट्रपति बनी हैं।
4. भारत के वित्त मंत्री और कॉर्पोरेट मामलों के मंत्री निर्मला सीतारमण बनी हैं।
5. भारत के कानून और न्याय मंत्री किरण रिजिजू हैं।
6. भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह हैं।
7. भारत के विदेश मंत्री डॉ. सुब्रह्मण्यम जयशंकर हैं।
8. भारत के जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत हैं।
9. भारत के सूचना और प्रसारण मंत्री , युवा मामले और खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर हैं।
10. भारत के भारी उद्योग मंत्री महेन्द्र नाथ पाण्डेय हैं।
11. भारत के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री रसायन और उर्वरक मंत्री मनसुख मंडाविया हैं।
12. भारत के विद्युत् मंत्री और ऊर्जा मंत्री राज कुमार सिंह हैं।
13. भारत के नए इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया हैं (अतिरिक्त प्रभार)
14. भारत के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर हैं।
15. भारत के गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री अमित शाह हैं।
16. भारत के महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति जुबिन ईरानी हैं।
17. भारत के नए मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार बने हैं। यह भारत के 25 वें चुनाव आयुक्त बने हैं।

18. भारत के संसदीय कार्य मंत्री , कोयला मंत्री और खान मंत्री प्रल्हाद जोशी है ।
19. भारत के नए मत्स्य पालन , और डेयरी मंत्री पुरुषोत्तम रुपाला है ।
20. भारत के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री वीरेंद्र कुमार है ।
21. भारत की नई अल्पसंख्यक मामलों की मंत्री स्मृति जुबिन इरानी (अतिरिक्त प्रभार) है ।
22. भारत के रेल मंत्री , संचार मंत्री और इलेक्ट्रोनिक्स – सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव है ।
23. भारत के सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन जयराम गडकरी है ।
24. भारत के शिक्षा मंत्री , कौशल विकास और उद्यमिता धर्मेन्द्र प्रधान है ।
25. भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्री , उपभोक्ता मामले खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री और कपड़ा मंत्री पियूष गोयल है ।
26. भारत के पर्यावरण , वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री और श्रम और रोजगार मंत्री भूपेन्द्र यादव है ।
27. भारत के सूक्ष्म , लघु और मध्यम उद्यम मंत्री नारायण तातू राणे है ।
28. भारत के पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री, और आवास और शहरी मामलों के मंत्री हरदीप सिंह पुरी है ।
29. भारत के नए नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य एम. सिंधिया है ।
30. भारत के बंदरगाह , जहाजरानी और जलमार्ग , आयुष मंत्री सर्बानंद सोनोवाल है ।
31. भारत के ग्रामीण विकास मंत्री , और पंचायती राज मंत्री गिरिराज सिंह है।
32. भारत के जनजातीय मामलों के मंत्री अर्जुन मुंडा है ।
33. भारत के संस्कृति मंत्री , पर्यटन मंत्री , और पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास मंत्री जी. किशन रेड्डी है ।
34. भारत के खाद्य प्रसंस्करण , उद्योग मंत्री पशुपति कुमार पारस है ।
35. भारत के नए "चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDF अनिल चौहान है ।
36. भारत की नई लेखा महानियंत्रक (CGA) भारत दास है ।
37. भारत के नए "रक्षा सचिव (Defence Secretary) अरमाने गिरिधर है ।
38. सड़क और परिवहन मंत्रालय की नई सचिव अलका उपाध्याय है ।
39. भारत के नए इस्पात सचिव नागेंद्र नाथ सिन्हा बनेंगे ।
40. भारत के नए ग्रामीण विकास सचिव शैलेश कुमार सिंह बनेंगे ।
41. कोयला मंत्रालय के नए सचिव अमृत लाल मीणा बने है ।
42. बंदरगाह जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय के नए सचिव सुधांश पंत बने है ।
43. भारी उद्योग मंत्रालय के नए सचिव कामरान रिजवी बने है ।
44. नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के नए सचिव भूपिंदर सिंह भल्ला बने है ।
45. कपड़ा मंत्रालय की नई सचिव रचना शाह बनी है ।
46. स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के नए सचिव संजय कुमार बने है ।
47. युवा मामलों के मंत्रालय की नई सचिव मीता आर लोचन बनी है ।
48. वित्तीय सेवा विभाग के नए सचिव विवेक जोशी बने है ।
49. भारत के महापंजीयक और जनगणना आयुक्त मृत्युंजय कुमार बने है ।
50. राजस्व विभाग के नए सचिव संजय मल्होत्रा बने है ।
51. कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के नए सचिव मनोज गोविल बने है ।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Whatsapp – https://wa.link/vqyxwn

Online order – https://cutt.ly/g0O6SHh

Call करें 9887809083